क़ादियानियत

द्वारा

मौलाना सय्यिद अबुलहसन अ़ली ह़सनी नदवी (रह़०)

(भूतपूर्व नाज़िम नदवतुल उलमा लखनऊ)

का

सारॉंश

सारॉंश कर्ता तथा टिप्पणीकार

डा० ह़ाफ़िज़ हारून रशीद सिद्दीक़ी

अपनी बात

हम मुसलमानों का विश्वास है कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के रसूल हैं और अन्तिम रसूल हैं, आप के अन्तिम सन्देष्टा (रसूल) होने की घोषणा कुरआन ने साफ़ साफ़ की और आप को ख़ातमन्नबिय्यीन फ़रमाया, "अलयौम अक्मल्तु लकुम दीनकुम व अतमम्तु अलैकुम निअ्मती व रज़ीतु लकुमुल्इस्लाम दीना" फ़र्माकर बता दिया कि दीन पूरा हो चुका, ख़ुद अल्लाह के रसूल स० ने साफ़ साफ़ फ़र्मा दिया है " अना ख़ातिमुन्नबिय्यीन व ला नबीय बअ्दी" मैं आख़िरी नबी हूं मेरे पश्चात् कोई नबी नहीं, अतः अब क़ियामत तक कोई भी नुबूवत का दावा करेगा तो यक़ीनन वह दज्जाल होगा, झूठा होगा, इस्लाम से ख़ारिज होगा।

हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पश्चात कई लोगों ने नुबूवत का दावा किया उम्मत ने उन सब को रिजक्ट किया उन ही में से क़ादियान के मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद भी हैं जिन्होंने नुबूवत का दावा किया और अपने मक्र से कुछ लाख लोगों को पथ भ्रष्ट कर लिया, उम्मत के आलिमों ने इनका भी भर पूर खण्डन किया, हमारे मौलाना सैयिद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह०) ने भी इन के खण्डन में एक किताब क़ादियानियत लिखी जो उर्दू में है, यह किताब, हिन्दी में उसीका सारांश है, जिस को पढ़ लेने वाला झूठे मिर्ज़ा जी और उनके गढ़े हुए झूठे धर्म से परिचित हो कर क़ादियानियत के जाल में फंसने से बच सकेगा इन्शाअल्लाह तआला।

हारून रशीद

विषय सूची

मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी का संक्षिप्त परिचय

मिर्ज़ा गुलाम अहमद जी ने स० १८३६ या १८४० ई० में ज़िला गुरदासपुर (पंजाब) के क़स्बा क़ादियान के मुग़ल ख़ान्दान के एक ऐसे ज़मीन्दार घर में जन्म लिया जो अंग्रेजी सरकार का वफ़ादार था, उस समय के अनुसार अ़रबी फ़ार्सी की माध्यमिक शिक्षा घर ही पर हुई, तिब्ब की किताबें अपने हकीम पिता मिर्ज़ा गुलाम मुर्तज़ा जी से पढ़ीं, स० १८६४ से १८६८ तक सियालकोट की कचेहरी में नौकरी की, फिर नौकरी छोड़ कर क़ादियान आ गये, और अपने घर की ज़मीन्दारी के कामों के साथ तफ़सीर और ह़दीस की किताबों के अध्ययन में लग गये।

मिर्ज़ा जी बचपन ही से कल्पनाओं में ऐसे लीन रहते थे कि घड़ी में चाबी देना, घड़ी देखना, उल्टे सीधे जूतों का पहचानना और गुड़ तथा मिट्टी के ढेलों में अन्तर करना तक न आता था।

जवानी ही से, शकर, पेशाब की अधिकता हिस्टर्या,

मिर्ज़ा जी हकीम नूरुद्दीन साहिब के मशवरे से मसीहे मौऊद बने

मिर्ज़ा जी १८६० ई० तक अपने को मुजद्दिद बताते रहे, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के स्वभाव का समझते रहे, फिर हकीम नूरुद्दीन साहिब ने मशवरा दिया कि आप मसीहे मौऊद होने का दअवा कीजिए आप ने मंजूर न किया और इन्कार कर दिया लेकिन आख़िर कार मसीहे मौऊद होने का दावा कर दिया[1], अपने इल्हामाती संदर्भों (हवालों) से समझाने लगे कि अहादीस में जो आता है कि मसीह अलैहिस्सलाम दिमश्क़ में उतरेंगे, उस समय उन पर दो चादरें होंगी, और दिमश्क़ का मतलब है ऐसा नगर जहां के लोग यज़ीदी स्वभाव के हों और यह बात क़ादियान पर सत्य उतरती है, तथा दो चादरों से मुराद मेरे दो रोग हैं, जो एक

१. ख़याल है कि मसीहे मौऊद के उतरने का जो रूप विस्तार से हदीसों में बयान हुआ है उसको सिद्ध करने में मिर्ज़ा जी कठिनाई देख रहे होंगे इस लिए आरंभ में इन्कार कर दिया परन्तु बाद में उन सब का दूसरा अर्थ सोच कर दावा कर दिया।

ऊपरी शरीर में है, दूसरा नीचे के भाग में।[1]

अपने लिखे के ख़िलाफ़

मिर्ज़ा जी अब तक जिस विश्वास की पुष्टि में लिखते बोलते रहते थे अब उसी का खण्डन करने लगे, और कहने लगे कि अगर मान भी लिया कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम आसमानों पर हैं तो वह इतने लम्बे समय में ऐसे बूढ़े हो गये होंगे कि किसी काम के न रह गये होंगे, और फिर दुन्या में उतरने के पश्चात क्या उन का यही काम होगा कि वह सूअरों का शिकार करते फिरें।[2]

हदीस की ख़बरों का मज़ाक़

मिर्ज़ा जी ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की

---

१. हाशिया "इज़ाल-ए-औहाम" पृष्ठ ३२-३४, जमीमः अरबअीन न० ३, पृष्ठ ४ (जिसे अल्लाह का पथप्रदर्शन नहीं मिलता उस को इसी प्रकार शैतान बहकाता है कि दिमश्क़ को क़ादियान और चादरों को रोग सुझा देता है।)

२. इज़ाल-ए-औहाम २१-२६ –
इन ही बातों को मिर्ज़ा जी पहले जिन तर्कों (दलीलों) से सिद्ध करते थे वह अब भी उन की किताबों में सुरक्षित हैं, ज्ञात रहे कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम का आसमानों पर जाना और क़ियामत के निकट उतरना एक सूचना है किसी भी नबी की दी हुई कोई सूचना कभी नहीं बदलती परन्तु मिर्ज़ा जी ने सूचना भी बदल दी और उनके मानने वालों की आंखों पर पर्दे पड़ गये।

और छापने की घोषणा की थी, परन्तु उन्होंने पांच ही को पर्याप्त मान लिया और समझा दिया कि एक बिन्दी ही तो कम है अतः पांच भागों से पचास का वादा पूरा हो गया।[1]

किताब छपना आरंभ हुई तो पहले उस का बड़ा स्वागत हुआ कारण यह कि इस में इस्लाम के विरोधी बातिल मज़ाहिब पर तर्क सहित ज़ोरदार आक्रमण थे, परन्तु पीछे के भागों में अंग्रेज़ों की चापलूसी ने बहुत से लोगों को चौंका दिया साथ ही किताब में ईश्वरीय संकेतों (इलहामात) की भर मार ने बड़े बड़े उलमा जैसे मौलाना मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी, मौलाना अ़ब्दुल क़ादिर साहिब लुधयानवी, के सपुत्र मौलाना मुहम्मद सा० और मौलाना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ साहिब आदि को मिर्ज़ा का विरोधी बना दिया, और इन उ़लमा ने भांप लिया कि यह व्यक्ति शीघ्र ही नुबूवत का दा़वा करेगा और ऐसा ही हुआ।

वर्णित दोषों के साथ साथ मिर्ज़ा जी ने इस किताब में हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के आसमानों पर उठाये जाने और कि़यामत के क़रीब (निकट) उतारे जाने को माना है, साथ ही ख़ातिमुन्नबिय्यीन हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पश्चात किसी नई नुबूवत और ईश वह्य (ईशवाणी) का प्रबल खण्डन किया है, "सुर्म–ए–चश्मे आंरिया"

---

१. बराहीने अह़मदीया पृष्ठ ७ ।

जो १८८६ ई० में लिखी गई, इसमें भी मिर्ज़ा जी ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के आसमानों पर जाने और फिर क़ियामत के क़रीब उतारे जाने का प्रबल समर्थन किया है।

हज़रत ईसा (अलै०) का आसमान से उतरना

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के आसमान से उतरने का अक़ीदा एक इस्लामी अक़ीदा है, जिस से मुसलमान परिचित हैं कि क़ियामत के क़रीब वह आसमान से उतारे जायेंगे, इस का वर्णन काफ़ी विस्तार से मौजूद है।

उन्नीसवी शताब्दी के अंत में हालात कुछ इस प्रकार हुए कि मुसलमान ईसा अलैहिस्सलाम का आसमान से उतरने और संसार में इस्लामी शासन स्थापित करने का बेचैनी से इन्तिज़ार करने लगे और चर्चा होने लगी कि सम्भव है कि हिजरी की तेरहवी शताब्दी के अन्त में उतरें, मिर्ज़ा जी और उनके चतुर सहयोगी हकीम नूरुद्दीन साहिब ने मुसलमानों की इस बेचैनी और चर्चा से लाभ उठाया और मिर्ज़ा जी ने मसीहे मौऊद का दअवा कर दिया।[1] जिसका बयान इस तरह है।

---

१. मसीहे मौऊद का अर्थ है वह ईसा जिन के आसमान से उतारे जाने का वअ़दा था।

सिरदर्द, चक्कर, दिल का दौरा, बदन में ऐंठन, नींद न आना जैसे रोगों से पीड़ित रहते थे, स्वयं लिखते हैं कि वह रात में सौ सौ बार पेशाब को उठते थे,[1] इन रोगों के साथ उन्होंने छे मास के रोजों के साथ लम्बा चिल्ला भी खींचा।

१८५२ या स० १८५३ ई० में शादी की, मिर्ज़ा सुल्तान अहमद और मिर्ज़ा फज़्ल अहमद दो लड़के पैदा हुये स० १८६१ ई० में इन बीबी को तलाक़ देकर १८६४ में दूसरी शादी की तो मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद, मिर्ज़ा बशीर अहमद, और मिर्ज़ा शरीफ अहमद पैदा हुए।

मिर्ज़ा जी ने "मसीहे मौऊद" होने का दावा किया फिर १९०१ ई० में नबी होने की घोषणा कर दी, आलिमों ने सख़्त मुख़ालिफ़त की, इन मुख़ालिफत (विरोध) करने वाले आलिमों में मौलाना सनाउल्लाह साहिब अमृतसरी आगे आगे थे, मिर्ज़ा जी ने मौलाना सनाउल्लाह सा० अमृतसरी को सम्बोधित करते हुए ५ अप्रैल स० १९०७ ई० को लिखित घोषणा की जिस का सारांश यह है यदि मैं नुबूवत के दअवे में झूठा हूं तो मैं आप के सामने ही मर जाऊंगा, और अगर मैं सच्चा हूं तो आप मेरे सामने हैज़ा, ताऊन जैसे छय रोग में मरेंगे, अगर ऐसा न हुआ तो मैं खुदा की ओर से नबी नहीं।[2]

१. ज़मीमः अरबईन पृष्ठ ३,४
२. तब्लीगे रिसालत जिल्द १० पृष्ठ १२०

परन्तु हुआ यह कि मिर्ज़ा ग़ुलाम अह्मद जी ने २६ मई १६०८ ई० को हैज़े की बीमारी में यह संसार छोड़ दिया, और २७ मई को क़ादियान में दफ़्न हुए, जब कि मौलाना सनाउल्लाह साहिब अमृतसरी मिर्ज़ा ग़ुलाम अह्मद क़ादियानी की मौत के पश्चात ४० वर्ष तक जीवित रहे और १५ मार्च १६४८ ई को आख़िरत का सफर किया।[1]

मिर्ज़ा जी के पश्चात हकीम नूरुद्दीन साहिब भैरवी उनके उत्तराधिकारी (ख़लीफ़ा) हुए, ६ वर्ष की ख़िलाफ़त के पश्चात् घोड़े से गिरकर इनकी भी मृत्यु हो गई।

मिर्ज़ा जी की महत्वपूर्ण किताबें

मिर्ज़ा जी ने लिखने पढ़ने का काम भी ख़ासा किया, मज़ाहिब का अध्ययन किया, विशेषतः मसीहियत, सनातन धर्म, और आर्यसमाज का अध्ययन किया और इन से तर्क वितर्क (मुनाज़रे) किये, १८७६ ई० में एक किताब लिखना आरंभ की जिसका नाम "बराहीने अह्मदीयः रखा, १८८४ ई० तक इस के चार भाग छपे परन्तु पांचवा भाग १६०७ ई० में छप सका मिर्ज़ा जी ने इस किताब को ५० भागों में लिखने

१. जब मिर्ज़ा जी मौलाना अमृतसरी से पहले मरे तो अपने कहने व लिखने के अनुसार झूठे सिद्ध हो गये अब चाहिए था कि उन के मानने वाले तौबा करते, परन्तु जिसे अल्लाह हिदायत न दे उसे कोई हिदायत नहीं दे सकता इसी लिए वह भटके के भटके रह गये।

हदीसों की जिस प्रकार हंसी उड़ाई है यह उन ही की (हिम्मत) है, हदीस की ख़बरों को इस प्रकार लिखते हैं :– इस बहस की दो टागें हैं।

एक तो मरयम के बेटे का आसमान से उतरना, इस टांग को तो क़ुरआन शरीफ़ और कुछ अहादीस ने हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम की मौत की ख़बर देकर तोड़ दिया।[1]

दूसरी टांग दज्जाल का आना है, सो इसे तो बुख़ारी की हदीस ने इब्नि सैयाद को दज्जाल बता कर तोड़ दिया।[2]

मिर्ज़ा जी कहते हैं कि कुरआन शरीफ़ में जो मसीह अलैहिस्सलाम के आने का समय १४०० वर्ष ठहराया है इसको बहुत से औलियाउल्लाह भी अपने कश्फ़ से मानते हैं,[3] और उसके अंक जमल के हिसाब

---

१. "इज़ाल–ए–औहाम"

२. क़ादियानी लोग तहक़ीक़ करें कि बुख़ारी में इब्नि सैयाद वाली हदीस की शरह में अैनी व इब्नि हजर ने क्या लिखा है ? और सहाब–ए–किराम और ताबिईन हज़रात ने क्या उसी को अन्तिम दज्जाल मान लिया? कदापि नहीं सहाब–ए–किराम तो आंधी आते ही मस्जिद पहुंच जाते कि क़ियामत आ गई तो क्या क़ादियानियों का यही अक़ीदा है कि क़ियामत आ चुकी, अरे दज्जाल तो बहुत से होंगे उन में से एक मिर्ज़ा भी हैं, अन्तिम दज्जाल और ही है।

३. इज़ाल–ए–औहाम पृष्ठ ६० संक्षेप्तः।

से १२७४, इस्लामी चान्द की सलख़ की रातों की तरफ़ इशारा करते हैं, जिस में नये चान्द के निकलने की बशारत छुपी हुई है जो ग़ुलाम अह़मद क़ादियानी के अ़ददों में पाई जाती है।[1]

मिर्ज़ा जी कहते हैं कि ईसा (अ़लै) आसमान पर नहीं गये

मिर्ज़ा जी ने ह़ज़रत मसीह़ अ़लैहिस्सलाम की वफ़ात (मृत्यु) सिद्ध करने में एड़ी चोटी का ज़ोर लगाया है, और उनका मरना कशमीर में सिद्ध किया है. और बूज़ासफ़ की

---

१. इज़ाल–ए–औहाम भाग २ पृष्ठ ३३८।

आश्चर्य है कि "मसीहे मौऊ़द" का समय जमल के ह़िसाब से सिद्ध किया जा रहा है, फिर मिर्ज़ा ग़ुलाम अह़मद क़ादियानी" के अंक १३००, और आयत (व इन्ना अ़ला ज़हाबिंबिही लक़ादिरून) के अंक १२७४ तथा मिर्ज़ा जी के वर्णित १४०० वर्षों में क्या सम्बन्ध है इन बेतुकी बातों को मिर्ज़ा जी का कोई मुरीद ही मान सकता है, ह़ज़रत मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का पढ़ा लिखा उम्मती तो मिर्ज़ा जी की इन बकवासों को उन की बीमारी का कारण ही समझेगा, कोई क़ादियानी बताये कि किस आयत में १४०० वर्ष पर मसीह़ के आने का उल्लेख है? किसी भी आयत में नहीं और मज़कूरा आयत का मिर्ज़ा जी के मसीह़ बनने से क्या सम्बन्ध रहा, किताब व सुन्नत से मिर्ज़ा जी का यह मतलब निकालना मिर्ज़ा जी के दज्जाल होने को सिद्ध करता है।

मशहूर क़ब्र को हज़रत मसीह की क़ब्र बता दिया।[1] ताकि मसीहे–मौऊद के आसमान से उतरने की तावील करके खुद को मसीहे–मौऊद बता सकें, परन्तु अब तो यह नुबूवत का दअ़वा करने वाले हैं।

मुरीद ने नुबूवत का एअलान किया मिर्ज़ा जी ने मान लिया।

स० १९०० ई० में मिर्ज़ा जी के मुरीद मौलवी अब्दुल करीम जुमे के ख़ुतबे में मिर्ज़ा जी के नाम, नबी व रसूल के साथ लाये,[2] नमाज़ के पश्चात एक दूसरे साहिब ने इसका विरोध किया, बातों से लड़ने लगे, आवाज़ ऊंची हो गई तो मिर्ज़ा जी ने सूर–ए–हुजुरात की वह आयत पढ़ी जिस का अर्थ है–

ऐ ईमान वालो अपनी आवाज़ें नबी की आवाज़ से ऊंची मत करो।

---

१. बराहीने अहमदीया पृष्ठ २२८।
मिर्ज़ा जी जो भी कह दें वे दलील उस को कैसे मान लिया जाय, यह कैसे सम्भव है कि मसीही अपने नबी की क़ब्र से अपरिचित हों और मिर्ज़ा जी उस से अवगत हों, जो मिर्ज़ा जी को नबी मानेगा वह ज़रूर मिर्ज़ा जी की बात को भी मान लेगा लेकिन जो अल्लाह और उसके आख़िरी रसूल पर ईमान रखता है, वह साफ़ कह देगा कि मिर्ज़ा जी झूठे हैं।
२. साफ़ लगता है कि यह काम एक षडयंत्र के अन्तर्गत हो रहा था।

पहले तो मिर्ज़ा जी अपने लिये नबी के गुण सिद्ध करते थे, परन्तु अब अपनी नुबूवत की स्पष्ट घोषणा करने लगे।[1]

मिर्ज़ा बशीरूद्दीन ने सफ़ाई पेश की

मिर्ज़ा बशीरूद्दीन साहिब "हक़ीक़तुन्नुबूवः" भाग १ के पृष्ठ १२४ पर मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब के विषय में लिखते हैं कि –

और नहीं जानते थे कि मैं दअ़वे की कैफ़ीयत तो वह बयान कर रहा हूं जो नबियों के सिवा और किसी में पाई नहीं

---

१. ज्ञात रहे कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर नुबूवत का ख़त्म होना किताब व सुन्नत से स्पष्ट रूप में सिद्ध है, इस के ना मानने वाले सभी अ़ुलमा के नज़दीक काफ़िर हैं, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को आख़िरी नबी न मानना और आप की शरीअ़त को कामिल न मानना किताब व सुन्नत के विरुद्ध है जो कुफ़्र है, क़ुर्आन मजीद में आप को "ख़ातमुन्नबिय्यीन बताया गया आपने ख़ुद घोषित किया कि "अना ख़ातिमुन्नबिय्यीन ला नबीय बअ़दी" मैं अन्तिम नबी हूं मेरे पश्चात कोई नबी नहीं, क़ुरआन ने बता दिया और घोषणा कर दी कि आज मैं ने तुम्हारे लिये तुम्हारा दीन मुकम्मल कर दिया अतः अब नुबूवत का दावा करने वाला और किताब व सुन्नत के आदेशों को बदलने वाला झूठा है काफ़िर है, देखिये मुफ़्ती शफ़ीअ़ सा० का उर्दू रिसाला "ख़त्मुन्नुबूवः"।

जातीं और नबी होने से इन्कार करता हूँ, लेकिन जब आप को मा़लूम हुआ कि जो कैफ़ियत अपने दा़वे में आप शुरू से बयान करते चले आये हैं वह कैफ़ियते नुबूवत है न कि कैफ़ीयते मुह़द्दिसीयत, तब आपने अपने नबी होने का एअ़लान किया है।[१]

मिर्ज़ा जी का दअ़वा कि वह साहिबे शरीअ़त नबी हैं

पहले तो मिर्ज़ा जी ज़िल्ली व बुरूज़ी नबी बने रहे फिर साहिबे शरीअ़त नबी होने का दा़वा कर दिया शरीअ़ते मुह़म्मदी के आदेश निरस्त भी करने लगे।

मिर्ज़ा जी ने जिहाद मंसूख़ किया

अरबअ़ीन न० ४ हाशिया पृष्ठ १५ पर लिखते हैं –

जिहाद या़नी दीनी लड़ाइयों की शिद्दत को ख़ुदाए तआला आहिस्ता, आहिस्ता कम करता गया है, ह़ज़रत मूसा

---

१. जो व्यक्ति अपने लिये नुबूवत के गुण बयान करे और यह न जाने कि यह गुण नुबूवत के हैं, फिर अल्लाह के हुक्म से नहीं ख़ुद ही समझे कि यह गुण नुबूवत के हैं और तब नुबूवत का एअ़लान करे, उसके झूठे होने में कोई सन्देह नहीं, निःसन्देह मिर्ज़ा जी झूठे थे आख़िरी नबी के पश्चात नबी कहां?

के वक़्त इस क़दर शिद्दत थी कि ईमान लाना भी क़त्ल से बचा नहीं सकता था, और शीरख्वार बच्चे भी क़त्ल किये जाते थे फिर हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम के वक्त में बच्चों बूढ़ों और औरतों का क़त्ल करना हराम किया गया और बाज़ क़ौमों के लिए बजाय ईमान के सिर्फ़ जिज़या देकर मुवाखिज़े से नजात पाना क़बूल किया गया, और फिर मसीहे मौऊद के वक़्त, क़तअन जिहाद मौक़ूफ़ कर दिया गया।[१]

सीधे सादे मुसलमानों को शरीअ़ते मुहम्मदी के बाज अहकाम की मंसूख़ी की खबर तो दे ही रहे थे अब अपने मुख़ालिफ़ को काफ़िर भी कहने लगे, मेअ़यारुल अख़बार पृष्ठ ८ पर लिखते हैं –

---

१. पवित्र कुरआन ने हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और आप की उम्मत के लिए घोषणा कर दी कि आज मैंने तुम्हारे लिये तुम्हारा दीन पूरा कर दिया (५:३) और खातिमुन्नबिय्यीन ने खबर दी कि जिहाद क़ियामत तक जारी रहेगा। (तिर्मिज़ी) अलबत्ता जिहाद की शर्तों का पाया जाना ज़रूरी है। अतः जो जिहाद के हुक्म को मौक़ूफ़ बताये, या किसी भी दीनी आदेश को बदले जाने या मंसूख (निरस्त) किये जाने की बात करे वह झूठा है इस लिए कि जिस दीन को अल्लाह ने मुकम्मल होने का एअलान कर दिया अब उसमें किसी कमी बेशी किये जाने की ख़बर झूठा ही दे सकता है।

मिर्ज़ा जी को इल्हाम हुआ कि उन को नबी न मानने वाला जहन्नमी है

"मुझे इल्हाम हुआ है कि जो शख़्स तेरी पैरवी नहीं करेगा और तेरी बैअ़त में दाख़िल नहीं होगा वह ख़ुदा और रसूल की ना फ़रमानी करने वाला जहन्नमी होगा।" और ज़िक्रुल हकीम न २ पृष्ठ २४ पर लिखते हैं –

ख़ुदाए तआ़ला ने मेरे पर ज़ाहिर किया है कि हर वह शख़्स जिस को मेरी दावत पहुंची है, और उसने मुझे कबूल नहीं किया है वह मुसलमान नहीं है।[1]

मिर्ज़ा जी और आवागमन

मिर्ज़ा जी आवागमन पर भी विश्वास रखते थे तिरयाकुलकुलूब पृष्ठ ५५ पर लिखते हैं –

ग़रज़ जैसा कि सूफ़ियों के यहां माना गया है कि

---

१. अल्लाह के नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः– उस समय तक कियामत न आयेगी जब तक बहुत से दज्जाल और कज़्ज़ाब (धोखे बाज और झूठे) न आ लेंगे और वह सब के सब नबी होने का दावा करेंगे, परन्तु मैं आख़िरी नबी हूं और मेरे बाद कोई नबी न आयेगा (सुनने अबीदाऊद) आख़िरी नबी की सूचनानुसार मिर्ज़ा जी नबी तो हो नहीं सकते अल्बत्ता दज्जालों और कज़्ज़ाबों (प्रतारणों और झूठों में से ज़रूर हो सकते हैं।)

मरातिबे वजूदे दौरिया हैं उसी तरह इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपनी ख़ू और तबीअत और दिली मुशाबहत के लिहाज़ से क़रीबन ढाई हज़ार वर्ष अपनी वफ़ात के बाद फिर अब्दुल्लाह पिसर अब्दुल मुत्तलिब के घर में जन्म लिया और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नाम से पुकारा गया।[1]

दूसरे नबियों से ऊंचे बने

मिर्ज़ा जी अपने को दूसरे नबियों से ऊंचा समझते थे, वह नुज़ूले मसीह में कहते हैं –

आंचि दादस्त हर नबी रा जाम
दाद आँ जाम रा मरा ब तमाम

(जो गुण सभी नबियों को अलग–अलग दिये गये वह समस्त गुण पूर्णतया मुझे दिये गये)। आगे लिखते हैं –

आदम नीज़ अहमदे मुख़्तार
दरबरम जाम–ए–हर अबरार

आदम और अहमदे मुख़्तार भी, मैं ने तो हर नेक का जामा पहन रखा है अर्थात मुझे सब गुण दिये गये हैं।

---

१. आवागमन (तनासुख़) इस्लामी विश्वास के विरुद्ध विश्वास है जो हिन्दुस्तानी मज़ाहिब की ईजाद है जिसे झूठा नबी ही अपना सकता है।

उस ख़ुद सिता ने तो यहां तक कह दिया –

जिन्दा शुद हर नबी ब आमदनम
हर रसूले निहां ब पैरहनम

(हर नबी मेरे आने से ज़िन्दा हुआ, हर रसूल मेरे पैरहन (कपड़ों) में छुपा हुआ है)

मिर्ज़ा जी के मुरीदीन अर्थात क़ादियानी तो मिर्ज़ा जी को मआज़ल्लाह सब नबियों से श्रेष्ठ मानते थे अख़बार अलफ़ज़्ल क़ादियान जिल्द १४ अंक ८५ ता० १६.४.१६२७ देखिये, लिखते हैं –

हज़रत मसीहे मौऊद अलैहिस्सलाम नबी थे, आप का दर्जा मक़ाम के लिहाज़ से रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का शागिर्द और आप का ज़िल्ल (छाई) होने का था, दूसरे नबियों (अलैहिमिस्सलाम) में से बहुतों से आप बड़े थे मुम्किन है सब से बड़े हों।[1]

---

१. जब किताब व सुन्नत से सिद्ध है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आख़िरी नबी हैं तो अब जो नबी होने का दावा करे वह काफ़िर है, जब मिर्ज़ा जी इस कुफ़्र को तैयार हो गये (शेष हाशिया अगले पन्ने पर)

नबियों का जीवन साधारण होता है

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नुबूवत के सत्य होने के तर्क में मिर्ज़ा जी लिखते हैं –

देखिये बराहीने अहमदीया भाग १ पृष्ठ ११७

"और फिर जब मुद्दते मदीद के बअ़द ग़लबा इस्लाम का हुआ तो उन दौलत व इक़बाल के दिनों में कोई ख़ज़ाना इकट्ठा न किया, कोई अ़िमारत न बनाई, कोई यादगार तैयार न हुई, कोई सामान शाहाना अ़ैश व अ़िशरत का तजवीज़ न किया गया कोई और ज़ाती नफ़अ़ न उठाया बल्कि जो आया सब यतीमों और मिस्कीनों और बेवा औ़रतों और मक़रूज़ों की ख़बरगीरी में ख़र्च होता रहा, और कभी सेर होकर न खाया। लेकिन मिर्ज़ा जी और उन के जानशीनों का

(पिछले पन्ने का शेष) तो अब क्या डर जब बेहया बन गये तो अब जो चाहे करें, बड़ाई हांकना तो घमण्ड की बात है ही इन्हों ने तो हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की खुली तौहीन भी की है चुनांचि दाफ़िअ़ुल बला के अन्तिम पृष्ठ पर लिखा है कि मआज़ल्लाह (हज़रत) ईसा (अ़लैहिस्सलाम) शराब पीते थे, फ़ाहिशा औ़रतें उनके सर में इ़त्र लगाती थीं, इस तरह की बातें किसी मुसलमान के बारे में झूट को कहें तो बड़ा गुनाह होगा लेकिन किसी नबी को ऐसी बातें कहें तो कुफ़्र है इस लिये कि नबी मा़सूम होता है।

हाल पढ़ें।

मिर्ज़ा जी के भोग विलास का जीवन

परन्तु मिर्ज़ा जी के घरेलू जीवन का स्तर इतना ऊंचा हो गया था कि उनके पक्के मुरीदों और मानने वालों को भी एतराज़ होने लगा था, एकबार ख़्वाजा कमालुद्दीन क़ादियानी ने मौलवी मुहम्मद अ़ली और मौलवी सरवर शाह क़ादियानी से कहा कि –

मेरा एक सुवाल है जिस का जवाब मुझे नहीं आता, मैं उसे पेश करता हूं, आप उस का जवाब दें। पहले हम अपनी औ़रतों को यह कह कर कि अंबिया व सहा़बा वाली ज़िन्दगी इख़्तियार करनी चाहिए कि वह कम व ख़ुश्क खाते और ख़शिन पहनते थे, इसी तरह़ हम को भी करना चाहिए, ग़रज़ ऐसे वअ़्ज़ कर के कुछ रूपया बचाते थे, और फिर क़ादियान भेजते थे, लेकिन जब हमारी बीबियां ख़ुद क़ादियान गईं, वहां पर रह कर अच्छी तरह़ वहां का ह़ाल मा़लूम किया तो वापिस आकर हमारे सर पर चढ़ गईं, कि तुम तो बड़े झूठे हो हम ने तो क़ादियान में जा कर ख़ुद अंबिया व सहा़बा की ज़िन्दगी को देख लिया है, जिस क़दर आराम की ज़िन्दगी और तअ़ैयुश (भोगविलास) वहां पर औ़रतों को हासिल है

उस का उ़शरे अ़शीर (सवां भाग) भी बाहर नहीं, हा़लांकि हमारा रूपया कमाया हुआ होता है और उनके पास जो रूपया जाता है वह क़ौमी अग़राज़ के लिए क़ौमी रूपया होता है, लिहाज़ा तुम झूटे हो, जो झूठ बोल कर अ़रस–ए–दराज़ तक़ हम को धोखा देते रहे आइन्दा हरगिज़ तुम्हारे धोखे में न आवेंगी। बस वह अब हमको रूपया नहीं देतीं कि हम क़ादियान भेजें।[1]

पाकिस्तान का रबवा

बटवारे से पहले क़ादियानियत का मरकज़ केवल क़ादियान था, बटवारे के पश्चात में उसका उत्तराधिकारी 'रबवा' एक महत्वपूर्ण क़ादियानी शासन बन गया, जिस के शासक मिर्ज़ा बशीरुद्दीन मह़मूद जी को शासन की समस्त आवश्यकतायें और क़ादियानी धर्म के एक तानाशाह निरंकुश शासक के समस्त अधिकार तथा भोग विलास के वह सभी साधन प्राप्त थे जो इस समय के किसी बड़े से बड़े इन्सान को प्राप्त हो सकते हैं।[2]

---

१. देखिये कशफ़ुल इख़्तिलाफ़ पृष्ठ १३ (अज़ सरवर शाह क़ादियानी) उन बेचारी औरतों की मत मारी गई थीं जो सिर्फ़ चन्दा देना बन्द किया, यह न सोचा कि ऐसे भोग विलास वाले नबी व सहाबी कैसे हो सकते थे, उनको तौबा करके मिर्ज़ा जी से सम्बन्ध समाप्त कर लेना था ताकि नजात की उम्मीद हो सकती ।

२. जिस को आख़िरत में अ़ज़ाब का सामना करना है उस को इस संसार में सामेयिक आनन्द मिलना ही चाहिए।

अंग्रेज़ी सरकार का समर्थन व सहयोग और जिहाद का विरोध

अल्लाह तआ़ला ने तो फ़रमाया कि ज़ालिमों की ओर मत झुको कि इस पाप से तुम को दोज़ख़ की आग पकड़ लेगी, फिर तुम अल्लाह के मुक़ाबले में कोई सहयोगी न पाओगे न ही कहीं सहायता मिलेगी। (सूर–ए–हूद आयत–११३)

हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का फ़रमान है कि – जिहाद क़ियामत तक जारी रहेगा। (तिरमिज़ी) मुजाहिदीने उम्मत बराबर जिहाद करते चले आ रहे हैं परन्तु मिर्ज़ा जी ने क़ादियानियों को अंग्रेज़ जैसे अत्याचारों की सहायता करने का फ़तवा जारी कर दिया और जिहाद को मन्सूख़ (निरस्त) कर दिया वह शहादतुल क़ुरआन के अन्त में लिखते हैं.– मेरा मज़हब जिस को मैं बार बार ज़ाहिर करता हूं कि इस्लाम के दो हिस्से हैं एक यह कि ख़ुदाए तआ़ला की इताअ़त करे दूसरे उस सलतनत की जिस ने अम्न क़ाइम किया हो, जिस ने ज़ालिमों के हाथ से अपने

साये में पनाह दी, सो वह सलतनत हुकूमते बरतानिया है।"

मिर्ज़ा जी ने ५० अलमारियां भर के किताबें लिखीं

तिरयाक़ुलक़ुलूब पृष्ठ १५ पर लिखते हैं –

मेरी उम्र का अक्सर हिस्सा इस सलतनते अंग्रेज़ी की ताईद व हिदायत में गुज़रा है और मैंने मुमानअ़ते जिहाद और अंग्रेज़ी इताअ़त के बारे में इस क़दर किताबें लिखी है कि अगर वह इकट्ठी की जायें तो पचास अलमारियां उन से भर सकती हैं मैंने ऐसी किताबों को तमाम मुमालिके अ़रब मिस्र और शाम और काबुल और रूम तक पहुंचा दिया है।[1]

बीमार मिर्ज़ा ने पचास हज़ार किताबें लिखीं

सितार–ए–क़ैसरा पृष्ठ ३ पर लिखते हैं – मुझ से सरकारे अंग्रेज़ी के हक़ में जो ख़िदमत हुई वह यह थी कि

१– जो व्यक्ति इस्लाम और मुसलमानों पर अंग्रेज़ों के अत्याचार से परिचय ना हो वह इतिहास का अध्ययन करे विशेष रूप से किताब कालापानी पढ़े, एक मुसलमान के लिए जाइज़ (वैध) नहीं कि वह अत्याचारी बरतानवी शासन की प्रशंसा करे, मुसलमान क्या हमारे देश का कोई हिन्दू भी अंग्रेज़ों के अत्याचारों के कारण उन की प्रशंसा को बहुत ही बुरा जानता है, बात वास्तव में यह है कि मिर्ज़ा जी ने क़ुरआन का विरोध किया, (शेष अगले पन्ने पर)

मैंने पचास हज़ार के क़रीब किताबें और रसाइल और इश्तिहारात छपवा कर इस मुल्क नीज़ दूसरे बिलादे इस्लाम में इस मज़मून के शायअ किये कि गवर्नमेंट अंग्रेज़ी हम मुसलमानों की मोहसिन है, लिहाज़ा हर एक मुसलमान का यह फ़र्ज़ होना चाहिए कि गवर्नमेंट की सच्ची इताअत करे।

यह सत्य है कि मिर्ज़ा जी ने मसीहियत के विरुद्ध लिखा और मसीही पादरियों से मुनाज़रे भी किये परन्तु यह सब ड्रामा था, "तिरयाकुलक़ुलूब" में हुज़ूर गवर्नमेंट आलिया में एक आजिज़ाना दरख़्वास्त के तहत लिखते हैं :-

मसीहियत की मुख़ालिफ़त पालीसी से थी

हिकमते अमली यही है कि बाज़ ईसाइयों की सख़्त तहरीरात का किसी क़दर सख़्ती से जवाब दिया जाय ताकि

(पिछले पन्ने का शेष) आख़िरी रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़ौल "अना ख़ातिमुन्नबिय्यीन" का विरोध कर के अपने नबी होने की घोषणा कर दी, फिर अपने को दूसरे नबियों से उच्च बताया, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का अपमान किया, भय था कि मुसलमान इन को हानि पहुंचाते, ऐसे में अंग्रेज़ी शासन ने इन को सुरक्षा दी इन्होंने ज़ालिम अंग्रेजों की प्रशंसा की, उस में भी पेट भर कर झूठ बोले क्या यह सत्य है कि मिर्ज़ा जी जैसे रोगी ने ५० अलमारियां भर के किताबें लिखीं पचास हज़ार किताबें लिखीं, ऐसा झूठ उड़ाने वाले को नबी मानने वाले भी हैं, वह यही क़ादियानी हैं।

सरीउलगज़ब इन्सानों के जोश फ़िरौ हो जायें और मुल्क में कोई बेअम्नी पैदा न हो।[1]

क़ादियानियों ने तो अंग्रेज़ी हुकूमत की मैत्री और मुसलमानों तथा जिहाद के विरोध में जानें तक दी हैं, अब्दुल लतीफ़, मुल्ला अब्दुल हलीम मुल्ला नूर अली यह तीनों क़ादियानी थे जो इन ही जुर्मों में अफ़ग़ानिस्तान में मारे गये।[2]

मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद ने अपने सिपास नामे (अभिनन्दन पत्र) में जो १६ जनवरी १९२२ ई० को प्रिन्स आफ़ विल्स को प्रस्तुत किया था अफ़ग़ानिस्तान में अंग्रेज़ी गवर्नमेंट की वफ़ादारी में क़ादियानियों के मारे जाने का वर्णन बड़े गर्व से किया है, कि यह सब आहुतियां अंग्रेज़ी शासन के साथ इख़्लास व वफ़ादारी (निःस्वार्थ तथा निष्ठावानता) के परिणाम में है।[3]

मिर्ज़ा जी का अन्दाज़ा ग़लत हुआ

मिर्ज़ा जी ने समझा था कि अंग्रेज़ी शासन सदा रहेगा, और उन को तथा क़ादियानी तहरीक को अंग्रेज़ी

१.तिर्याक़ुलक़ुलूब : ३१ (देखा आप ने कैसी मआज़िरत की सरकार हुज़ूर में।)
२. देखिये क़ादियानी अख़बार अलफ़ज़्ल ३ मार्च और ६ अगस्त स० १९२५ई०
३. ठीक है जिस की वफ़ादारी में उन को फ़ाइदा नज़र आया उस से वफ़ादारी की।

सुरक्षा प्राप्त रहेगी परन्तु मिर्ज़ा जी के पश्चात ५० वर्ष भी न बीते थे कि मिर्ज़ा जी जिस शासन को छाया तथा दीन को सुरक्षा देने वाला राज्य कहते थे, बरतानिया के बाहर उस का नाम भी न रह गया।

मिर्ज़ा जी की गालियां

मिर्ज़ा जी अपने विरोधियों को गन्दी गालियां सुनाने में बाज़ारियों को मात देते जब कि वह ख़ुद लिख चुके थे कि ख़ुदा का दोस्त कहलाने वाले में यह नीचता नहीं होना चाहिए। ज़रूरतुलईमाम पृ. ८पर लिखते हैं।

निहायत शर्म की बात है कि एक शख़्स ख़ुदा का दोस्त कहला कर फिर अख़लाके रज़ीला में गिरिफ़तार हो, और दुरुश्त (तेज़) बात का ज़रा भी मुतहम्मिल (सहन करने वाला) न हो सके, और जो इमामे ज़मां कहला कर ऐसी कच्ची तबीअ़त का आदमी हो कि अदना बात में मुंह में झाग आता है, आखें नीली पीली होती हैं वह किसी तरह् इमामे ज़मां नहीं हो सकता।

परन्तु मिर्ज़ा जी भूल गये कि उन्होंने "ज़रूरतुल ईमाम" में क्या लिखा है, वह "नजमुलहुदा" पृष्ठ १५ पर अपने विरोधियों को लिखते हैं –

दुशमन हमारे बयाबानों के खिन्ज़ीर (सुअर) हो गये हैं, और उनकी औरतें कुतयों से बढ़ गईं।

अंजामे आथम पृष्ठ २८१, २८२ पर मौलाना सअ़दुल्लाह साहिब लुधयानवी को फ़ासिक़, ग़ोल, लअ़ीन, नुतफ़—ए—सुफ़हा, फ़ासिक, मुफ़सिद, मुज़व्विर, जाहिल, इब्निबग़ा जैसे अलफ़ाज़ (शब्द) लिखे हैं।

मौलाना मुहम्मद हुसैन बटालवी मौलाना अ़ब्दुलहक़ हक़्क़ानी, मुफ़्ती अ़ब्दुल्लाह टोंकी, मौलाना अहमद अ़ली सहारन पूरी, मौलाना अहमद हारून अमरोहवी और मौलाना रशीद अहमद गंगोही जैसे चोटी के अुलमा के लिए, ज़िआब, किलाब शैताने लअ़ीन, शैताने अअ़मा, ग़ोले इग़्वा, शक़ी और मलऊन जैसे शब्द प्रयोग किये हैं इसी प्रकार औरों को भी गालियों का निशाना बनाया है।[1]

न कामना पूरी हुई न भविष्यवाणी

अपने एक रिश्तेदार (सम्बन्धी) मिर्ज़ा अहमद बेग की पुत्री कुमारी मुहम्मदी बेगम को प्राप्त करने के लिए मिर्ज़ा इलाहाम पर इलहाम सुनाते रहे परन्तु उस की बू भी न पा

---

१. क्या इन गन्दी गालियों के पश्चात भी नहीं समझ में आयेगा कि नबी तो दूर की बात है मिर्ज़ा जी एक मुसलमान भी न थे, मिर्ज़ा जी जब ईसा अ़लैहिस्सलाम को फुहश बातें लगा सकते हैं तो दूसरों की क्या गिन्ती।

यहूदियों की मदद से दुन्या में कुछ लाख हो गये उन्होंने सफलता प्राप्त करने के लिए इस्लामी आमाल के चर्बे को अपनाया तो, परन्तु बाद में घोषित कर दिया कि हमारे आमाल कुछ और ही हैं, ३ जुलाई स० १६३१ को अख़बार "अल फ़ज़ल" में मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद का ख़ुत्बा छपा था, उस में मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी के हवाले से कहा गया है कि :

मिर्ज़ा जी को इस्लाम की हर चीज़ से इख़्तिलाफ़ है

यह ग़लत है कि दूसरे लोगों से हमारा इख़्तिलाफ़ सिर्फ़ वफ़ाते मसीह और चन्द मसाइल में है, अल्लाह तआला की ज़ात, रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, कुरआन, नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात, ग़रज़ कि आप ने तफ़सील से बताया कि एक एक जुज़ में हमें इन से (मुसलमानों से) इख़्तिलाफ़ है।

३१ दिसम्बर १६१४ ई० के अलफ़ज़्ल में है कि –

खलीफ़–ए–अव्वल ने एलान किया था कि "उन का (मुसलमानों का) इस्लाम और है, हमारा और है।"[१]

---

१. मुसलमानों का इस्लाम तो वह है जिस को अल्लाह तआला ने "अलयौम अकमल्तु लकुम् दीनकुम्" कह कर मुकम्मल फ़रमा दिया था।

क़ादियान ह़रम है

क़ादियानी, क़ादियान को ह़रम समझते हैं, "दुर्रे समीन" में एक बैत इस प्रकार है –

ज़मीने क़ादियां अब मुह़तरम है
हुजूमे ख़ल्क़ से अर्ज़े ह़रम है।

उ़लमाए इस्लाम इस बात में सहमत हैं कि कोई कितना ही धार्मिक तथा संयमी हो यदि वह सह़ाबी नहीं है तो वह कम से कम दर्जे के सह़ाबी के स्थान को नहीं पहुंच सकता, परन्तु क़ादियानी लोग मिर्ज़ा जी के साथियों को सह़ाब–ए–किराम रज़ियल्लाहु अ़नहुम के बराबर समझते हैं, देखिये क़ादियानी अख़बार "अलफ़ज़्ल" २८ मई १९१८ ई०

मिर्ज़ा के साथियों को सहाबा के बराबर कर दिया

इन दोनों गिरोहों (अर्थात सह़ाब–ए–किराम और रूफ़क़ा–ए–ग़ुलाम अह़मद) में तफ़रीक़ करनी या एक को दूसरे से मजमूई़ रंग में अफ़ज़ल क़रार देना ठीक नहीं, यह दोनों फ़िर्क़े दरह़क़ीक़त एक ही जमाअ़त में हैं, सिर्फ़ ज़माने का फ़र्क़ है, वह बिअ़सते ऊला के तरबियत याफ़्ता हैं और

कि यह आप की लड़की के लिए निहायत दर्जे मूजिबे बरकत होगा और ख़ुदाए तआ़ला उन बरकतों का दरवाज़ा खोलेगा जो आप के ख़याल में नहीं।

मिर्ज़ा जी ने मुहम्मदी बेगम के वालिद को यह भी लिखा :-

आप को शायद मा'लूम होगा कि यह पेशगोई इस आ़जिज़ की (कि मुहम्मदी बेगम का निकाह़ मिर्ज़ा जी से अवश्य होगा) हज़ारों लोगों में मशहूर हो चुकी है, और मेरे ख़याल में शायद दस लाख से ज़ियादा आदमी होगा जो इस पेश गोई पर इत्तिलाअ़ रखता हैं। और भी लिखा –

मैंने लाहौर में जाकर मालूम किया, हज़ारों मुसलमान (क़ादियानी) मसाजिद में नमाज़ के बाद इस पेशगोई के ज़ुहूर के लिए बसिद्क़े दिल दुआ़ करते हैं।[१]

मुहम्मदी बेगम की फूफी की लड़की अ़िज़्ज़त बीबी मिर्ज़ा जी के बेटे फ़ज़्ल अह़मद की बीवी थीं मिर्ज़ा जी ने मुहम्मदी बेगम की फूफी और फूफा को भी लिखा कि अगर आप लोग यह रिश्ता न करवायेंगे तो मैं अ़िज़्ज़त बीबी को

---

१. मिर्ज़ा जी ने सोचा होगा कि लड़की के बाप पर झूठी नुबूवत तो ज़ाहिर ही हो चुकी है, शायद मुसलमानों की दुआ़ की ख़बर से पसीज जाय लेकिन अह़मद बेग यह तो जानते ही थे कि दुआ़ करने वाले मुसलमान नहीं क़ादियानी हैं।

अपने बेटे फ़ज़्ल अहमद से तलाक़ दिलवा दूंगा।

लेकिन "मरज़ बढ़ता गया जूं जूं दवा की, मिर्ज़ा जी की सारी पेशगोइयां झूठी सिद्ध हुई।[1] मुहम्मदी बेगम का निकाह मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद से कभी न हो सका, बल्कि मिर्ज़ा सुल्तान मुहम्मद से हुआ, और मिर्ज़ा सुल्तान मुहम्मद मिर्ज़ा जी के पश्चात बहुत दिनों तक जीवित रहे, मिर्ज़ा जी ने अिज़्ज़त बीबी को अपने बेटे से तलाक़ दिलवादी।[2]

क़ादियानियत का इस्लाम से कोई सम्बन्ध नहीं

क़ादियानियत एक अलग धर्म है जो एक झूठ बोलने वाले मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी का बनाया हुआ है। इस का इस्लाम अर्थात शरीअ़ते मुहम्मदी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यह बात ज़रूर है कि अगर वह अपने बनाये हुए धर्म के लिए इस्लाम का चर्बा (नमाज, रोज़ा, ज़कात आदि) न लेते तो उन के धर्म का भी वही परिणाम होता जो अकबर के दीने इलाही का हुआ, इस्लाम का चर्बा लेने से मिर्ज़ा जी को कुछ सफलता मिली और क़ादियानियत का वजूद क़ाइम हो गया, और वह क़ादियानियों के व्यापार की दौलत तथा

---

१. वास्तव में इन पेश गोइयों का आधार मानव शत्रु के इलहामात पर था।

२. अल्लाह ने मुहम्मदी बेगम को मिर्ज़ा जी से बचाकर जहन्नम से बचा लिया, उधर अिज्जत को भी क़ादियानियत से बचा लिया।

सके, सर्व प्रथम सगाई सन्देश दिया, जो स्वीकार न हुआ, फिर तो ईश वाणियों का आरंभ हुआ और तांता बन्ध गया, मिर्ज़ा जी ने १० जुलाई १८८० ई० को ८ पृष्ठों का एक इश्तिहार छाप कर बटवाया जो उन की किताब "आईन–ए–कमालाते इस्लाम" के पृष्ठ २८६ पर सुरक्षित है उस में लिखा है कि –

उस खुदाए क़ादिरे मुतलक़ ने मुझे फ़रमाया कि इस शख़्स (अहमद बेग) की दुख़्तरे कलां के लिए सिलसिल–ए–जुंबानी कर, और उनसे कह दे कि तमाम सुलूक और मुरूअत तुम से इसी शर्त के साथ किया जायेगा, और यह निकाह तुम्हारे लिये मूजिबे बरकत और रहमतों का एक निशान होगा और उन तमाम बरकतों और रहमतों से हिस्सापायेगा जो इश्तिहार २० फरवरी १८८६ ई० में दर्ज हैं, लेकिन अगर निकाह से इनहिराफ़ किया तो इस लड़की का अंजाम निहायत ही बुरा होगा, और जिस किसी दूसरे शख़्स से ब्याही जायेगी वह रोज़े निकाह से अढ़ाई साल तक और ऐसे ही वालिद इस दुख़्तर का तीन साल तक फ़ौत हो जायेगा, और इन के घर पर तफ़रिका और तंगी और मुसीबत पड़ेगी और दरमियानी ज़माने में भी इस दुख़्तर के लिए कई कराहत और ग़म के अम्र पेश आयेंगे।

मिर्ज़ा जी की किताब "इज़ाल–ए–औहाम में पृष्ठ १६८ पर है कि –

ख़ुदाए तआला हर तरह से इस को तुम्हारी तरफ़ लायेगा, बाकिरा या बेवा कर के और हर एक रोक दरमियान से उठा देगा और इस काम को ज़रूर पूरा करेगा, कोई नहीं जो इस को रोक सके "आईन–ए–कमालात" वाले इश्तिहार में पृष्ठ २८८ पर है कि : यह ख़याल लोगों को वाज़ेह हो कि सिदक़ या किज़्ब जांचने के लिए हमारी पेशगोई से बढ़ कर कोई मिहक्के इम्तिहान (कसौटी) नहीं हो सकता।

(आईना–ए–कमालाते इस्लाम : २८८)

मुहम्मदी बेगम के लिए मिर्ज़ा जी की आजिज़ी

जब उन्होंने देखा कि उन के गढ़े हुये आसमानी फ़ैसले का कोई प्रभाव नहीं पड़ा तो आजिज़ाना मिन्नत व समाजत से भी काम लिया इस सिलसिले के सभी पत्र "कल्म–ए–फ़ज़्ले रहमानी" के नाम से छपे हैं, उनमें से एक यह है, वह मुहम्मदी बेगम के वालिद को लिखते हैं।

मैं अब भी आजिज़ी और अदब से आप की ख़िदमत में मुलतमिस हूं कि इस रिश्ते से आप इनहिराफ़ न फ़रमायें

यह बिअ़सते सानिया के।"

इस्लामी महीनों के बजाय दूसरे महीने

क़ादियानियों ने तो इस्लामी महीनों के नाम भी बदल डाले हैं, इन के महीनों के नाम यह हैं:-

सुल्ह, तबलीग़, अमान, शहादत, हिजरत, इहसान, वफ़ा, ज़ुहूर, तबूक, इख़ा, नुबूवत, फ़त्ह।

समय समय पर इस्लाम के विरुद्ध जो संगठन उठे उनमें क़ादियानियत का स्थान उच्चतर रहा है।

क़ादियानित एक षडयंत्र है

वास्तव में क़ादियानियत शरीअ़ते मुहम्मदी (अ़ला साहि़बिहस्लातु वस्सलाम) के विरुद्ध एक षडयंत्र है, डाक्टर इक़बाल साहि़ब ने भी इस का अनुभव किया वह हर्फ़े इक़बाल में पृष्ठ १३७ पर लिखते हैं –

"मेरी राय में क़ादियानियों के सामने दो राहें हैं, या वह बहाइयों की तक़लीद करें या ख़त्मे नुबूवत की तावीलों को छोड़कर इस ख़त्मे नुबूवत के उसूल को पूरे मफ़हूम के साथ क़बूल कर लें, इन की जदीद तावीलें महज़ इस ग़रज़

से हैं कि इन का शुमार हल्क़—ए—इस्लाम में हो तौकि इन्हें सियासी फ़वाइद पहुंच सकें।

क़ादियानी स्वयं नबियों की भरमार से आजिज़

यह तो डाक्टर साहिब की राय थी क़ादियानी तो ग़ुलाम अहमद क़ादियानी के ग़ुलाम थे और हैं, "अनवारे ख़िलाफ़त" पृष्ठ ६२ पर लिखते हैं "एक नबी क्या मैं तो कहता हूं हज़ारों नबी होंगे चुनांचि यह सिलसिला चल पड़ा और ऐसा चला कि क़ादियानी ज़िम्मेदार भी उलझन में पड़ गये देखिये "अलफ़ज़्ल १.१.१९३५ ई० लिखते हैं – देखो हमारी जमाअ़त में ही कितने मुद्दई़ये नुबूवत खड़े हो गये हैं, उनमें सिवाय एक के सब के मुतअ़ल्लिक़ यह ख़याल रखता हूं कि वह अपने नज़दीक झूठ नहीं बोलते, वाक़िआ़ में इब्तिदा में उन्हें इलहाम हुए और कोई तअ़ज्जुब नहीं अब भी होते हों, मगर नक़्स यह हुआ है कि उन्होंने अपने इलहामों के समझने में ग़लती खाई है।[1]

१. इसी तरह ग़लती मिर्ज़ा जी से भी हुई कि इलहाम कहीं और से था वह समझे कहीं और से, और यही ग़लती हर उस शख़्स से हुई और होगी जिस ने ख़ातिमुन्नबिय्यीन के पश्चात ज़िल्ली, बुरूज़ी आदि किसी भी प्रकार की नुबूवत का दा़वा किया या करेगा।

उन में से बअज़ से मुझे ज़ाती वाक़िफ़ीयत है और मैं गवाही दे सकता हूं कि उनमें इख़्लास पाया जाता था, खशीयते इलाही पाई जाती थी, आगे ख़ुदाए तआ़ला ही जानता है कि मेरा यह ख़याल कहां तक दुरुस्त है, मगर इब्तिदा में उन की हालत मुख़लिसाना थी, उनके इल्हामों का एक हिस्सा ख़ुदाई इल्हामों का था मगर नक़्स यहां हुआ कि उन्होंने इलहामों की हिकमत को न समझा और ठोकर खा गये।

ईमान के लिए अल्लाह तआ़ला से बात चीत ज़रूरी नहीं

मिर्ज़ा जी ने अल्लाह तआ़ला की मअ़रिफ़त (पहचान) और नजात (मोक्ष) के लिए अल्लाह तआ़ला से बात चीत को आवश्यक बताया है जो पवित्र क़ुर्आन की शिक्षा के विरुद्ध है, पवित्र क़ुर्आन में तो बताया गया है कि मोमिन लोग सफल हो गये जो अपनी नमाज़ में खुशूअ़ (विनम्रता) अपनाते हैं।

दूसरे स्थान पर मोमिन की पहचान बताई गई है कि वह अल्लाह के बन्दे धरती पर नम्रता से चलते हैं।

कुर्आन मजीद में कहीं नहीं बताया गया कि मोमिन

वह है जिस पर इलहाम हो या वही आये, यह मिर्ज़ा जी की उपज है, अगर हर व्यक्ति अल्लाह तआला से बात चीत क़रने लगे और सीधे आदेश लेने लगे तो नुबूवत की ज़रूरत ही क्या, वास्तव में ख़ातिमुल अंबिया के पश्चात अल्लाह तआला से बात चीत वाले नुबूवत के बाग़ी (विद्रोही) हैं, निः सन्देह तप करने वाले अपने दिल के कानों से कुछ सुनते और दिल की आंखों से कुछ देखते हैं, परन्तु यह निर्णय करना कि उन को कौन सुना दिखा रहा है इस का समझना सरल नहीं।[1]

क़ादियानियत की लाहौरी शाख़ा

कादियानियत की लाहौरी जमाअत ने भी मुसलमानों को बहुत नुक़सान पहुंचाया है, यह लोग मिर्ज़ा जी को नबी नहीं एक सुधारक नवीन कर्ता (मुजद्दिद) मानते हैं, वास्तव में मिर्ज़ा जी के माध्यम से वह भी दीन को बिगाड़ना चाहते हैं और बहुत से लोगों को बहकाया परन्तु जिसे अल्लाह हिदायत दे उसे कोई गुमराह नहीं कर सकता, सोचना चाहिए कि जब मिर्ज़ा जी खुद नुबूवत का दावा कर के पथभ्रष्ट हो गये फिर कैसे लाहौरी जमाअत उसे मुजद्दिद

---

१. अतः अल्लाह के अंतिम नबी के पश्चात किसी के इल्हाम को दीन की कसौटी, या उसे दीन बनाना अपनी नजात का दरवाज़ा बन्द कर लेना है।

सिद्ध कर रही है, अगर मिर्ज़ा जी ने नुबूवत का दअ़वा न किया होता और उन के मरने के पश्चात उन्हे कोई नबी मानता तब तो गुंजाइश थी कि कोई उनको मुजद्दिद सिद्ध करता लेकिन मिर्ज़ा जी ने साफ़ साफ़ नुबूवत का दा़वा कर दिया साथ ही इतने बड़े नबी बन बैठे कि हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम पर ज़बान दराज़ी भी कर दी और उनके मानने वालों ने ख़ातिमुल अंबिया अ़लैहिस्सलाम को छोड़ कर सारे अंबिया से अफ़ज़ल भी समझ लिया इस दशा में तो मिर्ज़ा जी को मुजद्दिद क्या मुसलमान भी सिद्ध नहीं किया जा सकता।

कुर्आन मजीद में जो–जो आयतें हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) से मुतअ़ल्लिक़ हैं। मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद ने कहा कि वह सब आयतें उस पर भी उसके हक़ में उतरी हैं। इस तरह क़ादियानी क़ुर्आन तो पढ़ते हैं लेकिन उसमें हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की जगह पर ग़ुलाम अहमद को समझते हैं। कितना बड़ा धोखा देते हैं !

इसी तरह क़ादियानी कलमे में आये हुए हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) के नाम से ग़ुलाम अहमद का नाम मुराद लेते हैं। यह भी कितना बड़ा धोखा है!

— अनुवादक